नीरज पन्त
प्रधानाध्यापक
राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय
रौल्याना, बागेश्वर

सीखने के लिए भय रहित माहौल जरूरी है

सहायक अध्यापक – भास्कर पन्त, दीपक पांडे
सी.आर.सी.सी. – केवलानंद पाण्डे
भोजनमाता – गंगा देवी
नामांकन – 40

यह एक उलझन से भरा सवाल है कि किसी शिक्षक को अच्छा शिक्षक क्यों कहते हैं? बच्चों के लिए बहुआयामी भूमिकाएं निभाने के कारण शिक्षक शब्द ही एक तरह से पूर्णता का आभास देता है। हालांकि उस पूर्णता में भी नित सीखने रहने व सीखने में सहयोगी बने रहने की गुंजाइश सदा बनी रहती है। इस तरह के उम्मीद जगाते शिक्षकों की हमारी सूची में एक और नाम जुड़ गया है। यह नाम है बागेश्वर जिले के गरुड़ ब्लॉक के दूरस्थ राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रभारी हेड टीचर नीरज पंत का। नीरज पंत 23 दिसम्बर–2011 को शिक्षा विभाग में एक शिक्षक के रूप में जुड़े। 2011 से 2015 तक वह सीआरसी भगरतोला के समन्वयक रह चुके हैं। वर्तमान में रौल्याना उच्च प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत हैं। विकास खण्ड मुख्यालय से सड़कमार्ग से 25 किमी.दूर और फिर सड़क से करीब 3 किमी– हटकर ढलान पर सुन्दर सा गांव बसा है रौल्याना। ओबीसी वर्ग बहुल इस गांव के 31 बच्चे उक्त विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, सीख रहे हैं, समझ रहे हैं। विद्यालय का भवन बेहतरीन हालत में है। इस पर रंग किया हुआ है। दीवारों पर सुन्दर स्लोगन लिखे हैं। जैसे– चेलि कें पढ़ाओ, चेलि के बचाओ। सभी बच्चों का स्वागत है आदि। एक बड़ा सा मैदान और पेयजल के लिए स्रोत का पानी और पक्का टैंक जिसमें बारहमास पानी आता है। दो शौचालय विद्यालय प्रांगण में हैं। सुरक्षा

दीवार से लगा किचन गार्डन और सब्जी की छोटी क्यारियां हैं –जो मिड डे मील में बच्चों को ताजी और जैविक सब्जियां देती हैं। स्कूल में साफ, स्वच्छ कक्षा–कक्ष हैं जिनकी दीवारों पर बच्चों द्वारा निर्मित दीवार पत्रिका, लगी हैं। दीवारें अटी हैं दीवार पत्रिकाओं से। चार कम्प्यूटर, पुस्तकालय में 250 किताबें, शिक्षकों के द्वारा खरीदे गये खेल के सामान, विद्यालय की गतिविधियों की फोटो प्रदर्शनी, पेय जल के लिए लगा वाटर फिल्टर व पक्का भोजनालय। इतने संसाधनों के साथ तीन शिक्षक इस विद्यालय में तैनात हैं। साथ में हैं बहुत ही स्वादिष्ट भोजन बनाने वाली गांव की एक भोजन माता।

रौल्याना के शिक्षकों के आग्रह पर ही मैं उनके विद्यालय पहुंचा था। सड़क से विद्यालय जाने में करीब बीस मिनट का समय लगा। घने झुरमुटों के बीच से गुजरते हुए मैं विद्यालय पहुंचा। विद्यालय का आधा रास्ता खतरनाक है, आधे में प्रधान जी ने ठीक–ठाक रास्ता बना दिया है। विद्यालय पहुंचते ही सुखद एहसास हुआ। भौतिक वातावरण तो सुन्दर था ही विद्यालय का आन्तरिक वातावरण भी बड़ा सहज लगा। बच्चे गुनगुनी धूप में बाहर बैठे हैं, चार–पांच छोटे समूह बने हैं। दो समूह बहुत सी पत्तियों को एक चार्ट में चस्पा कर रहे हैं। एक समूह दो चार्टों में

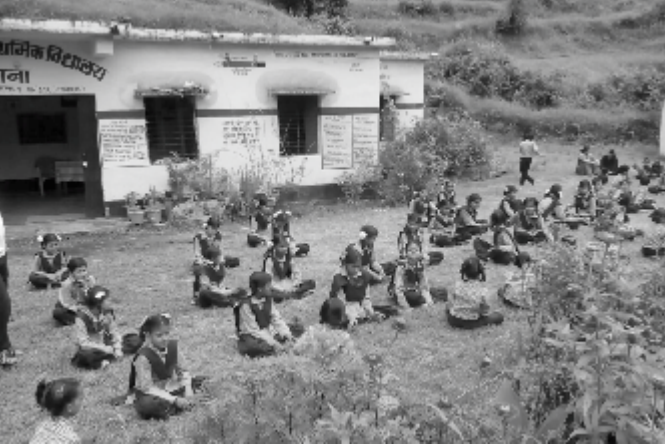

कहानियां, कविता, अनुभव आदि चस्पा कर रहा है। एक समूह एक नाटक की तैयारी कर रहा है। उस समूह से पूछा कि क्या आने वाले दिनों में कोई स्कूल प्रोग्राम है क्या? तो मुझे आश्चर्य हुआ सुन कर कि कोई कार्यक्रम नहीं है। मैंने फिर पूछा तो ये तैयारियां तो किसी स्कूल प्रोग्राम के लिए ही होती हैं ना? एक लड़की जिसका नाम ममता था ने कहा कि सर हम तो आधे दिन के बाद रोज इसी तरह कुछ ना कुछ समूह कार्य करते हैं। अब मैं समझ गया था कि यहां अवश्य कुछ अलग हो रहा है। स्कूल भवन के अन्दर बरामदे में कदम रखते ही देखा कि अन्दर की दीवार में एक बड़ा सा दीवार पत्र टंगा है, उसके बराबर में दो हिस्सों में स्कूल गतिविधियों की विभिन्न तस्वीरें लगी हैं जिनके नीचे तस्वीर के बारे में कुछ स्लोगन लिखे हैं। इस बीच शिक्षक नीरज और उनके सहयोगी भास्कर जी से गपशप हुई तो एहसास हुआ कि बने बनाये रुटीन से हटकर चलने वाले विद्यालयों को संचालित करने की चुनौतियां यहां भी अन्य विद्यालयों जैसी ही हैं, लेकिन दिमाग में यह ख्याल भी आया कि ऐसा क्या है जो तीन शिक्षकों वाला कोई विद्यालय ऐसी स्वायत्त व्यवस्था बना लेता है और कहीं अधिक अध्यापक संख्या वाले विद्यालय स्वायत्तता का प्रयोग करने और लीक से हटकर कुछ नया करने के ख्याल से भी डरते हैं?

बच्चों ने बताया कि पिछली बार उन्होंने दीपावली से पहले अपने अन्दाज से स्कूल में उत्सव मनाया। प्रतिवर्ष दीवाली से पहले और परीक्षाओं के बाद वह स्कूल में उत्सव मनाते हैं। टीचर भी उस कार्यक्रम में हिस्सा लेते हैं लेकिन बच्चे उस दिन अपने तरीके से कार्यक्रम करते हैं। क्या होता है इस कार्यक्रम या उत्सव में यह जानने की जिज्ञासा बढ़नी स्वाभाविक थी तो बच्चों ने कहा आप आइयेगा और खुद देखियेगा। अब तो जाना ही था। तो

मैं ठीक समय पर उस उत्सव में शामिल हो गया। बच्चे छह समूहों में बंटे थे। सुबह बच्चों ने स्कूल परिसर के आस–पास स्वच्छता अभियान चलाया, झाड़ियां काटीं। सूखी लकड़ी की टहनियों को स्कूल तक लाये। क्यारियों में लगे कुछ छोटे पौधों को पाले से बचाने के लिए उनके ऊपर छप्पर बनाये। इस काम में गांव की कुछ महिलाएं भी योगदान दे रही थी। वे घास काटने आयी थी, तो बच्चों को मदद करने आ गईं। इस श्रमदान कार्यक्रम के बाद पांचों समूहों ने अलग–अलग चूल्हे बनाये। जितने समूह उतने चूल्हे। समूहवार सब काम में लग गये। किसी ने पूरी बनाई, कोई चावल की सायी बना रहा था। एक समूह हरी सब्जी काटने में व्यस्त था। एक समूह खीर पका रहा था। यानी बच्चों के साथ पाक कला की बात भी समय पर होती रही होगी और आज उसका प्रदर्शन था। मैंने एक लड़के पंकज से पूछा दीवाली में पटाखे भी जलाते हो आप लोग या यहां सिर्फ खाना–पीना होगा? पंकज ने कहा कि खाने–पीने के बाद हम कल बनाये गये दियों में रंग भरेंगे और रंगोली बनायेंगे। दो–चार पैकट फुलझड़ी के हैं उनको जलायेंगे। बस इतना काफी है। इतना कह कर पंकज अपने समूह की रसोई में चला गया। कोई पूछ सकता है कि पढ़ाई–लिखाई के साथ इस तरह की गतिविधियों का क्या मेल है? किन्तु जिस तरह की रचनात्मकता बच्चे जी रहे थे और मिलकर सीखने का गुण उनके अन्दर सहज रूप से विकसित हो रहा था उसे कण–कण के अन्दर महसूस करना आसान नहीं होता।

एक और मजेदार बात देखी कि बच्चे प्रार्थना सभा में रोज अपने लीडर बदलते हैं। यानी विद्यालय सम्बन्धी व्यवस्थाओं के संचालन में भी बच्चों की भूमिका रहती है। भोजन परोसने का काम बारी–बारी से बच्चे करते हैं तो प्रार्थना सभा का संचालन के भी प्रतिदिन किसी नये बच्चे को अवसर मिलता है। कक्षा में कोई मॉनीटर नहीं होता है। न ही हल्ला करने वाले बच्चों के नाम नोट करता कोई दिखा। सामाजिक अध्ययन के एक सत्र में शिक्षक बच्चों के साथ गोले में बैठे हैं, बच्चे बारी–बारी से पैरा पढ़ते हैं, और शिक्षक बात–चीत मोड में अपनी बात जोड़ते जाते हैं। बच्चे भी अपने अनुभव जैसे –मेला, रामलीला, कोई पर्व के सामाजिक कार्य, आदि पर

अपने उदाहरण जोड़ने का प्रयास करते हैं। इस सत्र में शिक्षक ने कभी भी 'समझ गये', 'आया समझ में, जैसे शब्दों का उपयोग नहीं किया। यह भी रोचक दृश्य था – जिसमें निर्देश आधारित या शिक्षक की ही बात सर्वमान्य होगी ऐसा नहीं दिखा। बच्चे भी हंसते हुए तो कभी गंभीरता के साथ अपना मत रख रहे थे।

नीरज ने 1 जुलाई, 2015 रा.उ.प्रा. विद्यालय रौल्याना में प्रभारी हेड टीचर के रूप में पद ग्रहण किया था। मुझे ध्यान है उसी माह मैंने रौल्याना स्कूल में पहला विजिट किया था। तब बरसात का मौसम था और प्राथमिक विद्यालय भी इसी भवन में संचालित हो रहा था। क्योंकि प्राथमिक विद्यालय रौल्याना का भवन ठीक स्थिति में नहीं था। तब उक्त विद्यालय में चारदीवारी नहीं थी। समुदाय का बेहतर सहयोग नहीं था। बहुत चुनौतियां थी। कैसे सब सामान्य हो और बच्चों को सीखने–समझने के लिए कैसे बेहतर और सहज माहौल बनाया जाये इस तरफ नीरज ने प्राथमिकता के आधार पर फोकस किया। पहली चुनौती थी विद्यालय की चारदीवारी का निर्माण करवाना। गांव के दो परिवारों की जमीन उस जगह में थी, उनके साथ शिक्षक ने लगातार संवाद किया, स्कूल में बैठक की और बहुत प्रयासों के बाद दोनों ही परिवारों ने अपनी जमीन विद्यालय को दान स्वरूप दी जिसमें मजबूत चारदीवारी का निर्माण किया गया। दोनों ही शिक्षकों ने अपना व्यक्तित्व पैसा भी विद्यालय के कार्यक्रमों में और रंग–रोगन तथा दीवार निर्माण में लगाया।

नीरज ने बच्चों के साथ गांव का भ्रमण किया। रौल्याना समेत आस–पास के गांव में लोगों से बातचीत की। सामाजिक विज्ञान के शिक्षक से ऐसी उम्मीद होती है कि वह बच्चों में खोज–बीन विधि से शिक्षण को बढ़ावा दे। नीरज नवाचार में विश्वास रखने वाले शिक्षकों में भी हैं तो उनको यह तरीका रास आया। इस तरह के भ्रमण से गांव के इतिहास को समझने का प्रयास किया गया। 'हमारी वनस्पतियां' विषय पर भी बच्चों ने शोध किया। इस शोध से प्राप्त जानकारियों को दीवारपत्र में लिखा गया। शिक्षक ने प्रयास किया और साथी शिक्षकों के साथ समन्वय किया, उनके विचार भी

सुने गये। शिक्षक नीरज पंत ने कहा कि यहां कोई हेडटीचर नहीं है। सभी की बात महत्वपूर्ण है। विद्यालयी आयोजनों में बच्चों की राय भी ली जाती है। आम बैठक में तय होता है कि कौन क्या करेगा? बच्चों की टीमें बनती हैं। शिक्षक अपनी क्षमतानुसार अपने लिए काम चुन लेते हैं। मुझे रौल्याना के एक वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर मिला। इसमें गांव के अधिकांश अभिभावकों को उक्त कार्यक्रम में शामिल करने की शिक्षक की योजना सफल हुई। बच्चों के कार्यक्रम थे तो आधे कार्यक्रम का संचालन बारी–बारी से चार बच्चों ने किया जिसमें ममता, मन्जू, पंकज व हरीश शामिल थे। पहली बार बच्चों ने मंच संचालन की जिम्मेदारी ली थी। यह पल उन अभिभावकों के लिए बहुत हर्ष का था जो अपने बच्चों को सैकड़ों की भीड़ में और शिक्षा विभाग के अधिकारियों के समक्ष बोलते देख रहे थे। विद्यालयी कार्यक्रमों के अलावा कक्षा–कक्ष गतिविधियों में भी बच्चों ने असाधारण काम किया है। कक्षा सात और आठ के बच्चों ने वर्ष 2015 में बालशोध एवं सपनों की उड़ान कार्यक्रम के लिए 'हमारी वनस्पतियां' नाम से वृहद शोध किया। इन्होंने 31 औषधीय वनस्पतियों पर शोध किया जो उनके गांव के आस–पास मौजूद थी। इनके उपयोग और संरक्षण की बात बच्चों ने अपने तरीके से लिखी थी। बच्चों को एक–एक औषधीय वनस्पति के बारे में जानकारी थी, इनके नमूने भी बच्चों ने एकत्र किये। कक्षा–कक्ष में शिक्षक के साथ ज्यादातर समय बात–चीत करते बच्चे जिस सहजता और निर्भीकता से सीखते हैं उसे देखकर लगता है कि काश ऐसे विद्यालयों की संख्या बढ़ जाये तो शिक्षा में गुणवत्ता की बात सच होते देर न लगेगी।

नीरज अपनी व्यावसायिक दक्षता के प्रति सजग रहते हुए अपने समूह के

अन्य युवा शिक्षकों के अच्छे सहयोगी भी हैं। भगरतोला संकुल क्षेत्र के शिक्षक साथी अक्सर नीरज पंत को एक सहयोगी के तौर पर याद करते हैं। रौल्याना गांव में पुरुष अभिभावकों की तुलना में महिला अभिभावकों में ज्यादा सक्रियता दिखती है। गांव के प्रधान का विद्यालय को सक्रिय सहयोग रहता है। अकादमिक तौर पर कोई प्रधान या स्कूल प्रबधंन समिति सहयोग करेगी ऐसी उम्मीद कम ही है। लेकिन संसाधनों के रूप में प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य, विधायक आदि से शिक्षक नीरज पंत ने अच्छे सहयोगी रिश्ते बनाने में सफलता हासिल की है। एक भवन, चार कम्प्यूटर, पुस्तकालय हेतु पुस्तकें, फर्नीचर आदि विभिन्न विकास मदों से विद्यालय को उपलब्ध कराई हैं। इसे एक शिक्षक की सामाजिक और राजनैतिक पकड़ कह सकते हैं। शिक्षक केवल स्कूल और संबंधित समुदाय तक ही सीमित नहीं हो सकता। शिक्षक तो सामाजिक बदलाव का एक बड़ा माध्यम भी है। इसलिए शिक्षक से अपेक्षित उम्मीदों में उसका सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से सक्रिय होना काफी मायने रखता है। नीरज ने स्वयं को विस्तार दिया है। क्षेत्रीय सांस्कृतिक मंच हो या कोई सामाजिक–सार्वजनिक कार्यक्रम इन मंचों पर नीरज की मौजूदगी रहती ही है। संकुल अथवा विकासखण्ड स्तर पर आयोजित खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है जैसी कि नीरज और उनके साथियों की भी है। एक मजेदार बात जिसने मुझे प्रभावित किया और एक तटस्थ अवलोकनकर्ता की नजर से मैंने देखा– नीरज ने अपने स्कूल में घण्टी नहीं लगाई है, न ही वहां किसी तरह के सत्र घंटे के आधार पर चलते हैं। नीरज का कहना है कि घंटी एक तरह की गुलामी ही है। निर्देशित करने और बने–बनाये रूट पर चलने के लिए घंटी हो सकती है। जानवरों को संकेत

देने के लिए घंटी हो सकती है। स्कूल बालकों में स्वतंत्र सोच विकसित करने की जगह है यहां घंटी का क्या काम? इस उच्च प्राथमिक विद्यालय में लोकतांत्रिक विद्यालय की छवि दिखती भी है– जहां बच्चों को भय रहित शिक्षा मिलती है। अपनी बात रखने के अवसर मिलते हैं। मिलजुलकर सहयोगी बनकर सीखने के अवसर मिलते हैं। कक्षा–कक्ष की रचनात्मकता के साथ भ्रमण, स्कूल आयोजन, सांस्कृतिक आयोजन, बाल सभा जैसे आयोजन भी रुटीन में शामिल हैं। विद्यालय में अध्ययनरत बच्चे परिवेश में मौजूद विविधता को समझते हैं, जरूरत इस बात की ओर ध्यान दिलाने की है कि इसी तरह की विविधता इंसानों में होती है। यह कक्षा में भी मौजूद होती है। इस पर शिक्षक ने काम किया और आज उसके परिणाम दिखने लगे हैं। शिक्षक और बच्चों ने समूह गान का अभ्यास भी किया है। ढोलक और हारमोनियम के साथ बच्चों ने जल्दी धुनें पकड़ ली हैं।

यहां एक बार के भ्रमण में मुझे एक अजीब दृश्य देखने को मिला। कक्षा छूटने के बाद मध्याहन भोजन के लिए बच्चों को भोजन माता और शिक्षकों ने बैठाया। बच्चे भोजन कर रहे थे। लेकिन तीन बच्चे अलग से खेल रहे थे। उन्होंने भोजन नहीं खाया। ऐसा दो दिन और हुआ, तब मैंने जिज्ञासावश एक बच्चे से पूछ ही लिया कि ये जो तीन बच्चे अलग से खेल रहे हैं, खाना नहीं खाते क्या? बच्चे ने बताया कि इनके घर वालों का भोजन माता से झगड़ा है इसलिए नहीं खाते। इनको नहीं खाने के लिए घर से कहा गया है। यह एक गंभीर समस्या थी। नीरज पंत जी से बात हुई। उन्होंने इस मसले पर अपने सहयोगी शिक्षकों से बात की और बच्चों के अभिभावकों से भी बात की। एक मीटिंग भी की, धीरे–धीरे लोगों को समझ आया कि इस झगड़े में बच्चों को क्यों घसीटना। अब बच्चे लाइन में बैठकर आराम से खाते हैं। शिक्षक ही स्कूल को समता और समानता की राह पर ले जा सकता है, उसका परिप्रेक्ष्य भी मायने रखता है। इस बात को नीरज ने अपने काम से और सहयोगी शिक्षकों की मदद से स्थापित किया। अक्सर देखा जाता है कि स्कूलों में लड़के–लड़कियां अलग–अलग बैठते हैं। यह एक परम्परा जैसी है। पर जैण्डर को लेकर भी रौल्याना विद्यालय

में संवेदनशीलता दिखी। लड़के और लड़कियों को सामूहिक रूप में बैठाने से उनके बीच की असमानता कम होती है। यहां कक्षाओं में बैठक व्यवस्था कुछ ऐसी ही है। नीरज का मानना है कि स्कूल में भय रहित शिक्षा पर जोर देना चाहिए। इसके लिए वह प्रयास भी करते हैं, विद्यालय में ऐसा माहौल बनाया भी है। स्थानीय तीज–त्योहार हों या बड़े पर्व सभी को बच्चे सामूहिक रूप से स्कूल में मनाते हैं। बच्चों के साथ बहुत मित्रवत व्यवहार रखने वाले शिक्षक नीरज कहते हैं कि स्कूल तो भय रहित ही हैं लेकिन घर में बच्चों को भय के साथ जीना होता है। समाज में बहुत सारे भय विद्यमान हैं तो उनका सामना करने की ताकत बच्चों में आये, स्कूल की यह भी एक प्रमुख जिम्मेदारी है। शिक्षक शिक्षा के प्रति नीरज की स्पष्ट मान्यता है कि अपने पेशेवर विकास के प्रति शिक्षक को स्वयं पहल लेनी होगी। यदि शिक्षक यह मानता है कि उसकी भूमिका बहुत संवेदनशील है तो उसके व्यवहार में भी संवेदनशीलता झलकनी चाहिए। उसे समय पर शैक्षिक संवाद में भागीदारी करनी चाहिए। परन्तु विद्यालय समय पर होने वाली कार्यशालाओं से स्कूल में बच्चों को अध्ययन सम्बन्धी परेशानी का सामना न करना पड़े यह प्रमुख चिन्ता का विषय है। हां, अवकाश समय में स्वैच्छिक रूप से शैक्षिक विमर्शों और संवाद से जुड़े रहना चाहिए।

(नीरज पंत से हुई बिपिन जोशी की बातचीत पर आधारित)